E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2022 Special Issue 04 Volume IV SJIF Impact- 5.54

28

स्वतंत्रता आंदोलन में काव्य विधा का योगदान

स्वप्ना शंकर बेंडकुले
शोधछात्रा
एस.एम.आर.के.बीके-एके महिला महाविद्यालय, नाशिक
Email-sapanabendkule01@gmail.com
Mob.No. 9673268617

डॉ.जालिंदर वाय.इंगले
शोधनिर्देशक
एम .एस .जी कला ,वाणिज्य और विज्ञान
महाविद्यालय ,मालेगाव

हमारा भारत देश अपने अलग-अलग विशेषताओं के साथ अपनी एक अलग पहचान दुनिया में बना चुका है। भारत देश की स्वतंत्रता कई संघर्ष कई दर्दनाक घटनाओं को अपने दिल में छुपाए है । भारत की स्वतंत्रता से तात्पर्य है की ब्रिटिश शासन द्वारा 15 अगस्त 1948 को भारत की सत्ता का हस्तांतरण भारत की जनता के प्रतिनिधियों को किए जाने से हैं। इस स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कई लोगों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया । जिसका गवाह हमारे देश का इतिहास है ।

देश के स्वतंत्रता के लिए किया जाने वाला यह संघर्ष का यज्ञ काफी प्रज्वलित था। स्वतंत्रता आंदोलन ने पूरे देश में प्रेरणा जगा दी थी। साहित्यकार की कलम प्रत्येक काल में समाज का मार्गदर्शन करती रही है। जब-जब समाज दिग्भ्रमित होता है, राजनीति भ्रष्ट हो जाती है और जनसाधारण में अशांति बढ़ जाती है, तब तब लेखनी के सिपाही उठकर अपनी लेखनी के माध्यम से इन सब का मार्गदर्शन करते हैं। भारत का स्वतंत्रता आंदोलन भी इसका अपवाद नहीं है। उस समय में जब सर्वत्र हिंसा,अशांति दिखाई दे रही थी, तब हमारे देश में अनेक ऐसे क्रांतिकारी और साहित्यकार उत्पन्न हुए। जिन्होंने अपने कलम से समाज का मनोबल और आत्मबल बनाए बनाए रखने का प्रशंसनीय कार्य किया। स्वतंत्रता आंदोलन के इस महायज्ञ में साहित्यकारों ने तत्कालीन समाज में चेतना के ऐसे बीज बोये, जिनके अंकुर फूटने मात्र से एक झंझावात को जन्म दियाजिसके कारण हमारे भारत देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

आदिकाल से ही देश के लोगों को एक सूत्र में बांधने के लिए एक भाषा की जरूरत रही है। हर देश में सर्वाधिक समृद्ध भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया जाता है। ऐसे में प्राचीन काल में संस्कृत और मध्य काल में प्रशासकीय भाषा फारसी थी, लेकिन जनसामान्य की भाषा हिंदी ही रही है। "तीर्थ यात्रियों द्वारा सदियों से भारत के प्रत्येक कोने में हिंदी का प्रयोग अहिन्दी भाषा -भाषियों द्वारा किया जाता था । दक्षिण के आचार्यों ने आदिकाल से ही अनुभव किया था की इस भाषा के माध्यम से वे सारे देश के जन जन तक अपने सन्देश पहुंचा सकते हैं । वल्लभाचार्य, विट्ठल, रामानुज ,रामानंद इसकी राष्ट्रीय महत्ता को समझकर इसे अपने व्यवहार में लाते रहे।"[1] भारत देश की स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी कवियों की ओजस्वी उद्गारोंऔर विचारों तथा उनसे मिली प्रेरणा ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिससे कतई विस्मृत नहीं किया जा सकता।

काव्य मानव की तीव्र भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है। रचनाकार के सुख-दुख, उसकी करुणा जब सहज रूप से एक लय और एक राग के साथ बाहर आती है ,तो काव्य का जन्म होता है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय जो विद्रोह, स्वतंत्रता प्राप्ति की जो भावनाएँ कवियों के मन में तीव्रता से उमड़ रही थी, वह सब उनके काव्य रचनाओं में अभिव्यक्त हुई।

स्वदेश,स्वधर्म की रक्षा के लिए कवि और साहित्यकार एक ओर तो राष्ट्रीय भावों को अपनी कविता का विषय बना रहे थे, वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय चेतना को हवा दे रहे थे। स्वतंत्रता आंदोलन के आरंभ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक भिन्न-भिन्न चरणों में राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत कविताओं के कोख में स्वातंत्र्य चेतना का विकास होता रहा। स्वतंत्रता आंदोलन भारतीय इतिहास का वह युग है जो पीड़ा,कड़वाहट, दंभ,आत्मसम्मान,गर्व गौरव तथा सबसे अधिक शहीदों के लहू को समेटे है। स्वतंत्रता के इस महायज्ञ में समाज के प्रत्येक वर्ग ने अपने- अपने तरीके से अपना बलिदान दिया है । इसमें साहित्यिक योगदान भी उतना ही महत्वपूर्ण आ रहा है।

स्वतंत्रता आंदोलन से प्रभावित हिंदी कवियों की श्रंखला में ऐसे कई हिंदी कवियों के नाम समाविष्ट है, जिन का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। इस श्रंखला में भारतेंदु हरीशचंद्र, राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, राधाकृष्ण दास, मैथिली शरण गुप्त, श्रीधर पाठक, माधव प्रसाद शुक्ल, रामनरेश त्रिपाठी, नाथूराम शर्मा 'शंकर', गया प्रसाद शुक्लसनेही' 'त्रिशूल',